मुंशी प्रेमचंद का जीवन-दर्शन

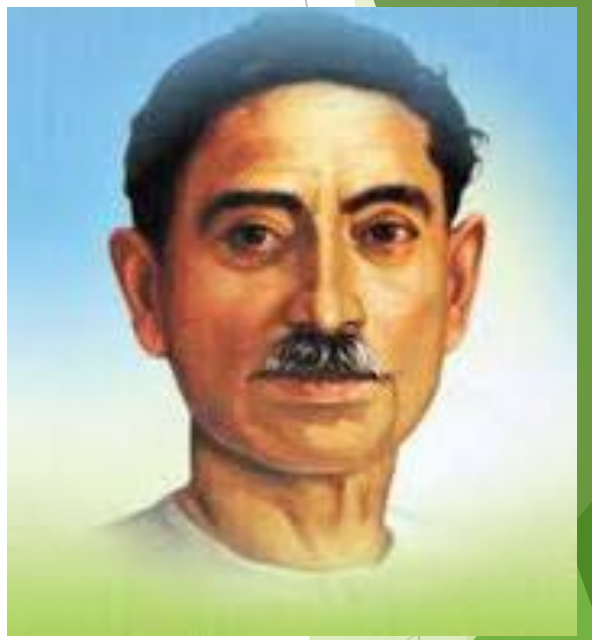

डॉ. राजेन्द्र सिंह

आचार्य, हिन्दी विभाग

Email : rajendersingh@mgcub.ac.in

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मोतिहारी, बिहार

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा छठा सेमेस्टर

पाठ्यक्रम : प्रेमचंद HIND 3026

मुंशी प्रेमचंद का जीवनकाल

31 जुलाई 1880 - 8 अक्तूबर 1936

- यह समय भारत में अंग्रेजों की गुलामी का समय था।
- लेखकों और सृजनकर्मियों पर अंग्रेजों की विशेष निगाह रहती थी।
- मुंशी प्रेमचंद की 'सोजेवतन' कहानी संग्रह को जब्त भी कर लिया गया था। इसका बड़ा कारण यही था कि इस संग्रह की कहानियों के पात्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनमानस का निर्माण करने की भूमिका निभा रहे थे।

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के एक अति महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध एवं आलोचना में बेहतरीन साहित्य की रचना की है।

लगभग 300 कहानियां लिखी। जो मानसरोवर के 8 भागों में संकलित हैं।

बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा, सत्याग्रह, कफन, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, नशा, सवा सेर गेहूं, पूस की रात इनकी सुप्रसिद्ध कहानियां हैं।

प्रेमचंद को 'कथा सम्राट' और 'उपन्यास सम्राट' भी कहा जाता है।

मुंशी प्रेमचंद के मुख्य उपन्यास निम्न प्रकार हैं –

कर्मभूमि, निर्मला, गबन, गोदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, प्रेमा, प्रेमाश्रम, सेवासदन, कायाकल्प

'मंगलसूत्र' उनका अधूरा उपन्यास है, 'दुर्गादास' एक बालोपयोगी उपन्यास है

मुंशी प्रेमचंद : जीवन-दर्शन

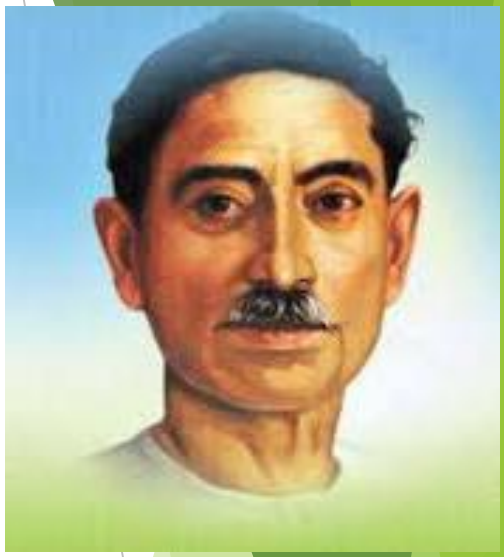

- साहित्य और समाज
- समाज और जड़ मान्यताएं
- जाति, वर्ण, संप्रदाय
- स्त्री की परतंत्रता
- आजादी के आंदोलन का समय
- महात्मा गांधी का अवतरण
- डॉ. बी.आर. अंबेडकर का अवतरण

मुंशी प्रेमचंद, "अपने मार्ग, अपने अध्ययन, अपनी फिलॉसोफी के बिना कोई सच्चा कलाकार नहीं हो सकता। अपनी आंखों से जीवन देखो, अपने अनुभव से उसे जांचो। जैसा पाओ, वैसा लिखो।"

मुंशी प्रेमचंद का जीवन-दर्शन : प्रगतिशीलता

- प्रगतिशीलता की प्रवृत्ति प्रमुख
- शोषित, दलित, स्त्री और दबे-कुचले की आवाज
- गोदान, सेवा सदन, कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, रंगभूमि आदि उपन्यास
- प्रगतिशील नेखक संघ की 1936 में, लखनऊ में
- 'महाजनी सभ्यता' निबंध लिखा 1936 में
- 'गोदान' में गोबर का कथन, ''यदि वे भगवान का भजन करते हैं तो किसानों के बल पर और मजदूरों के बल पर। यह पाप का धन पचे कैसे? इसीलिए दान-धर्म करना पड़ता है, भगवान का भजन भी इसीलिए होता है। भूखे नंगे रहकर भगवान का भजन करें तो हम भी देखें। हमें कोई दो जून खाने को दे, तो हम आठों पहर भगवान का भजन ही करते रहें। एक दिन खेत में ऊख पड़े तो सारी ाक्ति भूल जाएं।''

- ‘निर्मला’ में अनमेल विवाह और दहेज प्रथा की दुखान्त कहानी है।
  - उपन्यास का लक्ष्य अनमेल-विवाह तथा दहेज प्रथा के बुरे प्रभाव को अंकित करता है।
    - निर्मला के माध्यम से भारत की मध्यवर्गीय युवतियों की दयनीय हालत का चित्रण हुआ है।
      - उपन्यास के अन्त में निर्मला की मृत्यू इस कुत्सित सामाजिक प्रथा को मिटा डालने के लिए एक भारी चुनौती है।
  - निर्मला के चारों ओर कथा-भवन का निर्माण करते हुए असम्बद्ध प्रसंगों का पूर्णतः बहिष्कार किया गया है।
    - निर्मला का एक वैशिष्ट्य यह भी है कि इसमें ‘प्रचारक प्रेमचन्द’ के लोप ने इसे ने केवल कलात्मक बना दिया है, बल्कि प्रेमचन्द के शिल्प का एक विकास-चिन्ह भी बन गया है। .

मुंशी प्रेमचंद का जीवन-दर्शन : वैज्ञानिक दृष्टिकोण

- भारतीय समाज अंधविश्वासी समाज है
- बड़े पैमाने पर अवैज्ञानिकता है
- इसी अंधविश्वास के कारण गरीब अनपढ़ जनता का दोहन होता है।
- प्रेमचंद का साहित्य इन्हीं बातों पर विमर्श करता है।
- गोदान में प्रो. मेहता के माध्यम से वैज्ञानिकता का प्रसार किया है –''धन को आप किसी अन्याय से बराबर फैला सकते हैं। लेकिन बुद्धि को, चरित्र को और रूप को, प्रतिभा को और बल को बराबर फेलाना आपकी शक्ति से बाहर है। ....बुद्धि तब भी राज करती थी, अब भी करती हक और हमेशा करती रहेगी।''
- 'गोदान' में राय साहब के मुख से कहलवाते हैं, ''बुद्धि के बगैर किसी समाज का संचालन नहीं हो सकता''

मुंशी प्रेमचंद का जीवन-दर्शन : मानवतावाद

- जाति, धर्म, संप्रदाय की अपेक्षा मानव पर बल
- 'कर्बला' एक बड़ा उदाहरण
- 'ईदगाह' का हामिद
- 'बूढ़ी काकी' में लाड़ली
- गोदान में रायसाहब का पश्चात्ताप दर्शनीय है दुनिया समझती है, हम बड़े सुखी हैं। हमारे पास इलाके, महल, सवारियां, नौकर-चाकर, कर्ज, वेश्याएं, क्या नहीं है? लेकिन जिनकी आत्मा में बल नहीं, अभिमान नहीं, वह चाहे कुछ भी हो, आदमी नहीं है।'

मुंशी प्रेमचंद का जीवन-दर्शन : मानवतावाद

- 'ठाकुर का कुआं' कहानी वीभत्स जातिवादी समाज का प्रतिनिधित्व
- निबंधों में भी मानवीय पक्ष उभरा
- महिलाओं के प्रति विनम्र और लोकतांत्रिक
- शिक्षा ही स्वावलंबन का आधार
- कला जीवन के लिए के प्रस्तावक
- प्रेमचंद, ''साहित्य जीवन की व्याख्या है। जिस साहित्य में जीवन का अंकन नहीं, मैं उसे साहित्य मानने में संकोच करता हूं।''

मुंशी प्रेमचंद का जीवन-दर्शन : दलित एवं स्त्री-विमर्श

- हजारों सालों से भारत में जातिवादी समाज का
- पढ़ने का अधिकार नहीं था
- महिलाओं की स्थिति और भी भयावह
- मानवाधिकारों से वंचित
- डॉ. अंबेडकर का प्रादुर्भाव, प्रेमचंद का कर्मभूमि
- कबीर, रैदास आदि संतों की लंबी लंबी परंपरा, जोतिबा फुले, सावित्री बाई फुले के प्रयास

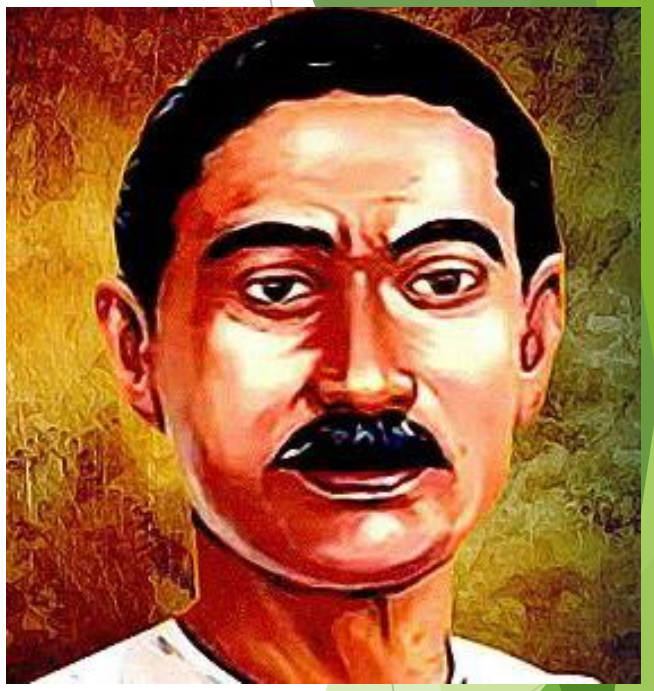

मुंशी प्रेमचंद का जीवन-दर्शन : दलित एवं स्त्री-विमर्श

- तेज होते स्वतंत्रता संग्राम में दलित और महिलाओं को साहित्य का क्रेंद बनाया
- 'सद्गति', 'कफन', 'ठाकुर का कुआ' आदि कहानियां सीदी दलित विमर्श से जुड़ी
- 'बूढ़ी काकी', 'बड़े घर की बेटी' स्त्री विमर्श की कहानियां
- प्रेमचंद पुरुष वर्चस्व को तोड़ना चाहते थे।
- 'सेवासदन' में वेश्या समस्या का समाधान दिया।
- 'गबन' उपन्यास में खटीक देवीदीन के दो बच्चे देश पर शहीद होते दिखाए।

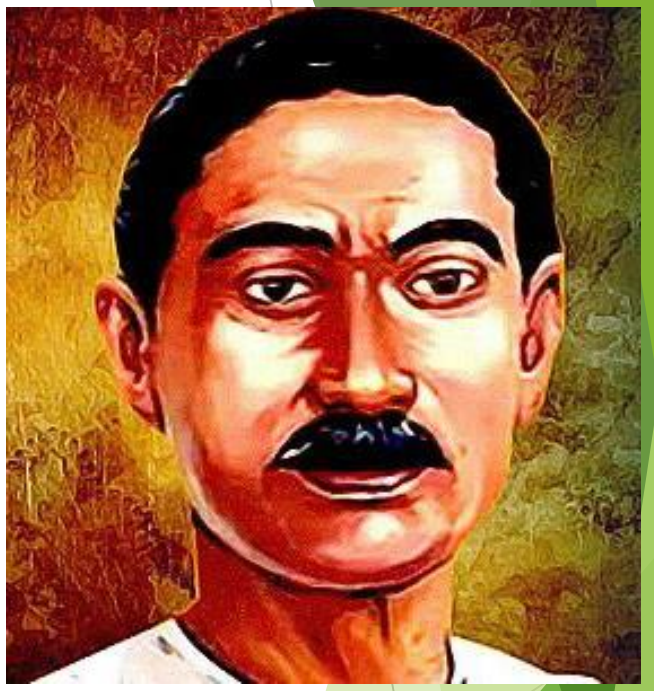

मुंशी प्रेमचंद का जीवन-दर्शन : गांधीवादी

- भारतीय राजनीतिक परिवेश में गांधी के उदय का काल
- गांधी ने हर क्षेत्र को प्रभावित किया।
  - प्रेमचंद गांधी के आंदोलनों से प्रभावित ही नहीं थे, अपितु उनके आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे।
    - सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, अनशन से प्रभावित
- 'कर्मभूमि' में दलितों का मंदिर प्रवेश
- 'कायाकल्प' उपन्यास में पात्र चक्रधर गांधीवादी विचारों से प्रभावित है, ''अहिंसा का नियम गोओं के लिए ही नहीं, मनुष्यों के लिए भी है।'

मुंशी प्रेमचंद का जीवन-दर्शन : गांधीवादी

- प्रेमचंद और गांधीवाद में पर्याप्त समानता है।
- 'गबन' उपन्यास में रमानाथ और देवीदीन का संदर्भ प्रेमचंद के प्रभाव से ही आया लगता है।
  - 'गबन' उपनयास के अंत में वेश्या जौहरा जालपा के सच्चे प्रेम, त्याग ओर सेवाभाव से प्रभावित होती है।
    - जौहरा वेश्यावृति छोड़कर सामान्य जीवन बिताने लगती है।
- प्रेमचंद गांधी के आंदोलनों को साहित्यिक रूप दे रहे थे, चाहे वह अछूतोद्धार हो या उनके अधिकारों की बात

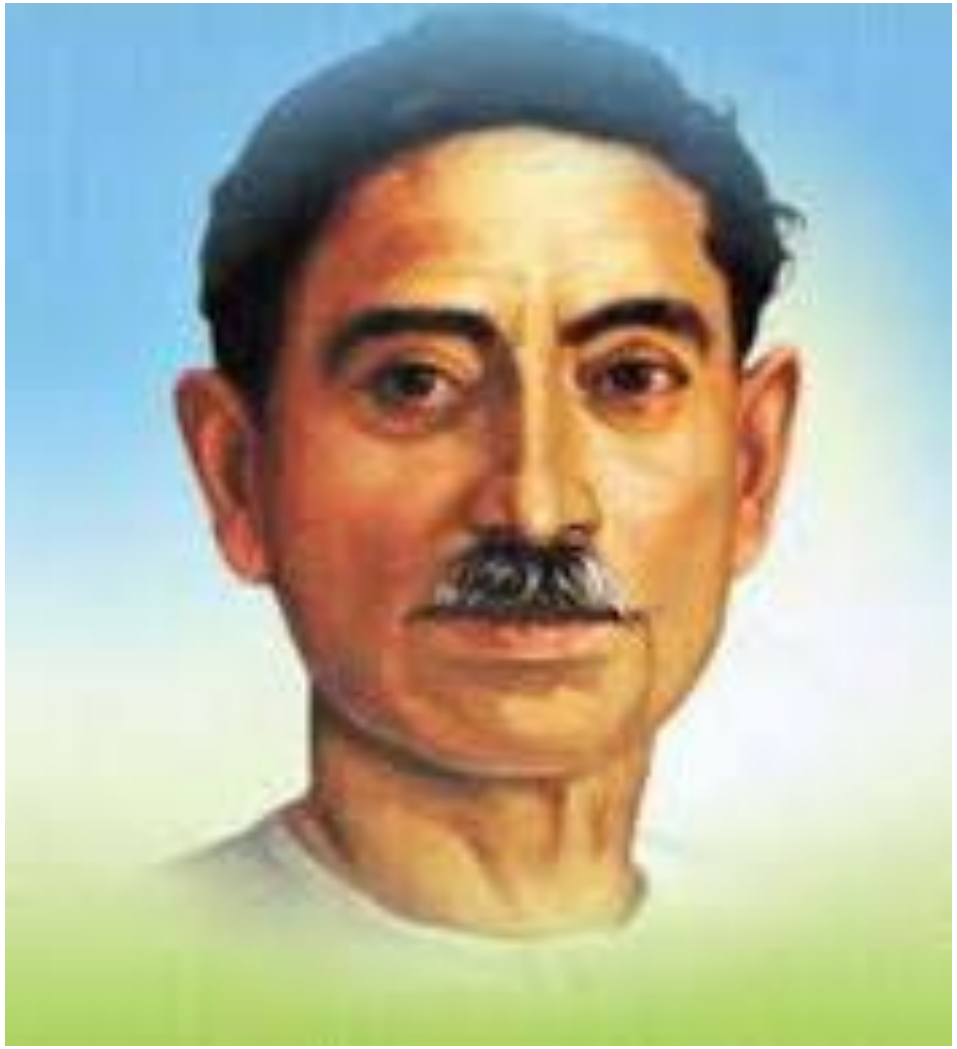

धन्यवाद